

श्री धर्मपुरी लक्ष्मी नरसिंहगीतिकाः

Shri Dharmapuri Lakshminarasimha gitika

sanskritdocuments.org

February 24, 2018

---

# Shri Dharmapuri Lakshminarasimha gitika

श्री धर्मपुरी लक्ष्मी नरसिंहगीतिकाः

## Sanskrit Document Information

---

Text title : dharmapurIlakShmInarasiMhagItikAH  
File name : dharmapurIlakShmInarasiMhagItikAH.itx  
Category : vishhnu, koriDevishvanAthasharmA, suprabhAta, devii  
Location : doc\_vishhnu  
Author : koriDe vishvanAthasharmA, dharmapurI  
Transliterated by : koriDe vishvanAthasharmA  
Proofread by : koriDe vishvanAthasharmA  
Acknowledge-Permission: Koride Vishwanatha Sharma  
Latest update : February 24, 2018  
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

February 24, 2018

*sanskritdocuments.org*

---

श्री धर्मपुरी लक्ष्मी नरसिंहगीतिकाः



ॐ गँ गाणपतये नमः ॥

उरिनराकृतिं सौखिकाननं

जलधिपुत्रिका सेविताङ्घ्रिकम् ।

भरणाभूषितं भूषित प्रभम्

नरुडरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ १ ॥

उरिवराननं धातुकान्तकं

श्रितजयप्रदं यङ्कधारिणम् ।

भुजगशायिनं भूरिदायिनं

नरुडरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ २ ॥

ऋषिवराश्रितं ऋग्भिरयितं

विदितवेद्यकं वेदगम्यकम् ।

श्रितवरार्थिने कल्पवृक्षकं

नरुडरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ३ ॥

दितिज्ज्वालकप्राणरक्षणो

दितिज्ज्मन्दिरे स्तम्भसम्भवम् ।

द्विज्ज्भुधैः सदा पूजितं स्तवैः

नरुडरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ४ ॥

सुजनभक्तकान् सक्तारक्षकं

कुजनशिक्षणो सक्तयित्तकम् ।

मकरमौष्णिकात् नागरक्षकं

नरुडरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ५ ॥

सुरपतेः सुभात्सञ्चयाधगां

मुनिसतीं वरां पादुकोद्धृतम् ।

निरतभाविनां पापनाशकं

नरुडरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ६ ॥

विडितपापधिं कालकालगं

उरिरीतीरितं निर्मलङ्करम् ।

यदियमुच्यतेऽजामिणादिना

नरुडरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ७ ॥

निगमरक्षणे मत्स्यकायिनं

अमुतसाधने कूर्मवेधिनम् ।

अवनिपालने श्रीवराडकं

नरुडरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ८ ॥

दनुजमारणे सैडिकाननं

भलिविमर्दने वामनाङ्गतिम् ।

कुपतिभञ्जने सार्गवद्विजं

नरुडरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ९ ॥

रघुकुलोद्भवं रावणान्तकं

द्रुपदजायने कृष्णरूपिणम् ।

शमनसाधने बुद्धरूपिणं

नरुडरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ १० ॥

कलिविमर्दने कल्किदेडिनं

अभयरूपिणं आश्रिताश्रयम् ।


नतमुण्डोऽस्म्यहं नैकधाङ्गतिं

नरुडरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ११ ॥


Composed by Koride Vishwanatha Sharma, Dharmapuri, Telangana

Proofread by Koride Vishwanatha Sharma.

---

——  
*Shri Dharmapuri Lakshminarasimha gitika*

pdf was typeset on February 24, 2018

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

